29 अक्टूबर, 2016

प्रेस विज्ञप्ति

दोनों विश्वविद्यालयों के कुलपति ने कहाः जामिइ और डीयू व्यापक संसाधन साझा करने के सिद्धांत पर सहमत

अनुसंधान और शिक्षा के कार्यो को प्रोत्साहित करने का कदम उठाते हुए, जामिया मिल्लिया इस्लामिया और दिल्ली विश्वविद्यालय अध्यापकों, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय सुविधाओं और डेटाबेस सहित संसाधनों को साझा करने के सिद्धांत पर सहमत हुए हैं।

जामिइ के 96वें स्थापना दिवस समारोह के समापन समारोह में यह घोषणा की गई जहाँ दिल्ली विश्वविद्यालय कुलपति और प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय विधि के प्रोफ़ेसर, प्रो. योगेश त्यागी मुख्य अतिथि थे।

जामिइ कुलपति, प्रोफेसर तलत अहमद ने कहा कि इस संबंध में शीघ्र ही दोनों केंद्रीय विश्वविद्यालय एक औपचारिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करेंगे।

छात्रों और संकाय सदस्यों को संबोधित करते हुए जामिइ के खचाखच भरे हुए अंसारी सभागार में प्रोफ़ेसर त्यागी ने कहा कि 'एक शैक्षिक संस्थान से स्वस्थ वातावरण, पारदर्शिता, निष्पक्षता, पूर्वाग्रहों और भ्रष्टाचार से आजादी की उम्मीद की जाती है और संस्थानों को इसे पूरा करने की ओर काम करना होगा।'

'चाहे वह हिंदू धर्म हो या इस्लाम, भारत सांस्कृतिक रूप में समृद्ध है, इसके मूल में न्याय है। जहाँ न्याय और निष्पक्षता मानव व्यवहार और आचरण को आकार देते हैं, सभी समस्याएं हल हो जाती हैं। कानून भी इसी बात की मांग करता है – समानता, न्यायिक प्रक्रिया की मांग। तो कानून और धर्म के बीच कोई असंगति नहीं है। प्रोफ़ेसर त्यागी ने कहा, इस सब से अलग, कुछ मतभेद औपचारिक कानूनी प्रक्रियाओं से और कई अनौपचारिक प्रक्रियाओं द्वारा हल किए जा सकते हैं।'

छात्र को उनके सपनों को साकार करने के महत्व के बारे में याद दिलाते हुए उन्होंने कहा कि 'हम आम तौर पर अपने सपनों के बारे में जागरुक होते हैं, लेकिन दूसरों के सपनों के लिए उदासीन। हमारे गांव के लोगों के सपनों का क्या? अपने समुदाय, राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय समाज के सपने के बारे में क्या?' उन्होंने कहा कि शैक्षिक संस्थान की भी इन साझा सपनों को प्राप्त करने के प्रति छात्रों की मदद करना एक जिम्मेदारी है।

प्रोफ़ेसर अहमद, कुलपति जामिइ, ने कहा कि दिल्ली विश्वविद्यालय और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के बीच बहुत अच्छा समन्वय है और हम इसे 'संसाधनों के साझा करने के सिद्धांत' के रुप में आगे ले जाने पर सहमत हो गए हैं।

प्रोफ़ेसर अहमद ने यह भी कहा कि एक ऐसी केंद्रीय प्रणाली होनी चाहिए जिसके तहत डी.यू. जेएनयू और जामिइ के सभी छात्र विचारों के अधिक से अधिक आदान–प्रदान और सीखने के लिए दिल्ली में सभी विश्वविद्यालयों के विशेष कार्यक्रम में इकट्ठा हो सकें।

प्रोफ़ेसर अहमद ने तालीमी मेले के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के संदर्भ में कहा कि इस वर्ष के आयोजन की एक नई बात भारतीय वायु सेना और नौसेना द्वारा स्टालों की स्थापना करना था। 'इसके पीछे यह विचार है कि हमारे छात्र प्रेरित हो सकें और देश की सेवा करने के लिए सेना में शामिल हों।

मेले के समारोह दिवस का एक और आकर्षण नाटक सोसायटी जामिइ, 'जोश' द्वारा नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन था, जिसमें चार टीमों ने भाग लिया और प्रदर्शन में समाज और राजनीति के विभिन्न पहलुओं पर टिप्पणी की।

प्रो. तसनीम मिनई, डीन छात्र कल्याण जिनके कार्यालय ने तालीमी मेला के आयोजन में नोडल भूमिका निभाई, उन्होंने कहा कि 'जामिया सांस्कृतिक समिति ने हमारे छात्रों की प्रतिभा के प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई छात्रों ने इस वर्ष बहुत अच्छी तरह से तालीमी मेला के दौरान प्रदर्शन किया है, मुझे आशा है कि हमारे छात्र हमेशा इस मंच को याद रखेंगे।'

समाज कार्य विभाग ने 'फ्रॉम सेल्फ इनिशिएशन टू इंस्टीट्यूशनलाइज़ेशनः सेलिब्रेटिंग द एक्पेरिमेंट्स एंड एक्सपीरिएंसेस ऑफ सोशल एक्टिविटीज़' पर मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित, बेज़वदा विल्सन, द्वारा एक व्याख्यान का आयोजन किया। उन्होंने मैनुअल स्केवेन्जिंग के मुद्दे और मेडिसिन बाबा के रूप में लोकप्रिय ओंकार नाथ शर्मा, जोकि औषधियां एकत्र करते हैं और उन्हें गरीब और जरूरतमंद लोगों में वितरित करते है, पर बात की।

इससे पहले जामिया स्कूलों के छात्र ने कुलपति को गार्ड ऑफ ऑनर दिया और जामिया का ध्वजारोहण किया और दिल को छू लेने वाला रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

27 अक्टूबर, 2016 को, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन अकादमी ने प्रोफेसर नीरा चंदोक द्वारा एक वार्ता का आयोजन किया जिसमें लोकतांत्रिक कामकाज के लिए नागरिक समाज के महत्व को रेखांकित किया गया।

प्रोफेसर चंदोक ने आज़ादी के बाद की अवधि के नागरिक समाज के विकास के कई चरणों का उल्लेख किया। जब नागरिक समाज निवर्तन की स्थिति में था जोकि इमरजेंसी तक चला। आपातकाल के बाद का समय नागरिक अधिकार आंदोलनों, महिलाओं के आंदोलनों का उदय, नर्मदा बचाओ आंदोलन, वैकल्पिक शिक्षा आंदोलन, पर्यावरण, चिकित्सा और फसलों के विकास के आंदोलनों के लिए जाना जाता है। भोजन के अधिकार के लिए पीयूसीएल द्वारा पीआईएल एक नए चरण के सूचना अधिकार अधिनियम जैसे अन्य कार्यों की शुरुआत थी। आज, प्रोफेसर चंदोक के अनुसार कई नागरिक समाज संगठन व्यावसायिक बन गए हैं और सामाजिक माल के सप्लायर के रूप में काम कर रहे हैं।

प्रो. साइमा सईद
मानद उप मीडिया समन्वयक
9891227771